अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

हिन्दू अध्ययन- परंपरा से वैश्विक अकादमिक विमर्श तक

(A Qualitative and Interdisciplinary Study)

Dr. Gayatri Sharma
Assistant Professor (Hindi),
Chameli Devi Institute of Professional Studies, Indore (M.P.)

सार (Abstract)

हिन्दू अध्ययन (Hindu Studies) समकालीन वैश्विक अकादमिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण और निरंतर विकसित होता हुआ बहुविषयी क्षेत्र है, जिसकी बौद्धिक परंपरा सहस्राब्दियों पुरानी वैदिक सभ्यता से लेकर आधुनिक विश्वविद्यालयों और शोध-संस्थानों तक विस्तृत है। यह अनुशासन केवल धार्मिक ग्रंथों अथवा अनुष्ठानों के अध्ययन तक सीमित नहीं है, बल्कि भारतीय जीवन-दृष्टि, नैतिक मूल्यों, दार्शनिक अवधारणाओं तथा सांस्कृतिक परंपराओं का समग्र, आलोचनात्मक और वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।यह शोध-पत्र इस धारणा को पुष्ट करता है कि हिन्दू अध्ययन एक जीवंत ज्ञान-परंपरा है, जो परंपरा और आधुनिकता के मध्य सेतु का कार्य करते हुए वैश्विक बौद्धिक विमर्श को नई दृष्टि प्रदान करता है। गुणात्मक शोध-पद्धति पर आधारित इस अध्ययन में वैदिक संहिताओं, उपनिषदों, पुराणों, दर्शन-ग्रंथों तथा आधुनिक व्याख्याओं का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। इसके माध्यम से यह प्रतिपादित किया गया है कि हिन्दू अध्ययन मानव अस्तित्व, कर्तव्य, करुणा, सह-अस्तित्व तथा प्रकृति के साथ संतुलन जैसे सार्वभौमिक प्रश्नों पर गहन वैचारिक आधार उपलब्ध कराता है।आधुनिक वैश्विक समाज जिन जटिल समस्याओं—जैसे पहचान का संकट, सांस्कृतिक टकराव, नैतिक विघटन तथा पर्यावरणीय असंतुलन—से जूझ रहा है, उनके समाधान के लिए हिन्दू अध्ययन एक वैकल्पिक और समावेशी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यह न केवल पूर्व और पश्चिम के बीच संवाद को सशक्त बनाता है, बल्कि बहुसंस्कृतिवाद और अंतरधार्मिक समझ को भी प्रोत्साहित करता है।

अतः यह अध्ययन निष्कर्षतः प्रतिपादित करता है कि हिन्दू अध्ययन परंपरा की जड़ों में स्थित होकर भी वैश्विक बौद्धिक मंच पर समसामयिक प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम एक सशक्त अकादमिक अनुशासन है, जो मानवता के भविष्य के लिए मूल्यपरक और समन्वयात्मक दृष्टि प्रदान करता है।

मुख्य शब्द: हिन्दू अध्ययन, परंपरा, वैश्विक अकादमिक विमर्श, बहुविषयी दृष्टि, संस्कृति, जीवन-दृष्टि, नैतिकता।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

भूमिका (Introduction)

इक्कीसवीं सदी का वैश्विक समाज अभूतपूर्व परिवर्तन, तकनीकी प्रगति और सांस्कृतिक बहुलता के युग से गुजर रहा है। परंतु इस प्रगति के साथ-साथ मानव समाज गहरे नैतिक संकट, पहचान की जटिलता और आध्यात्मिक रिक्तता का भी अनुभव कर रहा है। ऐसे समय में हिन्दू अध्ययन एक ऐसे अकादमिक अनुशासन के रूप में उभर रहा है, जो परंपरा और आधुनिकता के बीच सेतु बनकर खड़ा है।

हिन्दू परंपरा का मूल दृष्टिकोण "वसुधैव कुटुम्बकम्" (महान उपनिषद) मानव समाज को एक वैश्विक परिवार के रूप में देखने की प्रेरणा देता है। यह दृष्टि केवल धार्मिक भावना नहीं, बल्कि सांस्कृतिक समावेशन और वैश्विक मानवता का दर्शन है। इसी आधार पर हिन्दू अध्ययन आज केवल भारत-केंद्रित विषय न रहकर अंतरराष्ट्रीय अकादमिक विमर्श का अभिन्न अंग बन चुका है (Sharma, 2000)।

हिन्दू अध्ययन भारतीय सभ्यता की उस गहन परंपरा को उद्घाटित करता है, जहाँ दर्शन, धर्म, कला, समाज और नैतिकता परस्पर जुड़े हुए हैं। यह अनुशासन केवल ग्रंथों तक सीमित नहीं, बल्कि वह जीवित सांस्कृतिक अनुभवों का अध्ययन भी करता है—जैसे पर्व, अनुष्ठान, लोकपरंपरा, योग, ध्यान और सामाजिक संरचनाएँ (Lipner, 2010)।

शोध-समस्या (Statement of the Problem)

समकालीन अकादमिक परिदृश्य में "हिन्दू अध्ययन" प्रायः केवल धार्मिक या पौराणिक परंपराओं के अध्ययन तक सीमित मान लिया जाता है, जबकि इसकी वास्तविक प्रकृति बहुविषयी, दार्शनिक, सांस्कृतिक और सामाजिक आयामों से युक्त है। पश्चिमी विश्वविद्यालयों में विकसित "Hindu Studies" का ढाँचा लंबे समय तक औपनिवेशिक दृष्टिकोण से प्रभावित रहा, जहाँ भारतीय ज्ञान-परंपरा को बाहरी श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया (Halbfass, 1988)। इसके परिणामस्वरूप हिन्दू परंपरा की आंतरिक दार्शनिक संगति, सामाजिक गतिशीलता और आध्यात्मिक जीवन-दृष्टि को पूर्णतः समझा नहीं जा सका (Michaels, 2004)।

इसके अतिरिक्त, वैश्वीकरण और प्रवासी भारतीय समुदायों के विस्तार के साथ हिन्दू अध्ययन की सामाजिक-सांस्कृतिक भूमिका में भी परिवर्तन आया है। परंतु वर्तमान शोध-साहित्य में इस परिवर्तन का सम्यक विश्लेषण सीमित है (Lipner, 2010)। इसी प्रकार, आधुनिक विश्वविद्यालयों में हिन्दू अध्ययन के पाठ्यक्रमों की संरचना, उद्देश्य और वैचारिक दिशा पर भी एकीकृत दृष्टि का अभाव है (Flood, 1996)।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

इस प्रकार मुख्य शोध-समस्या यह है कि हिन्दू अध्ययन को अब भी एक स्थिर, अतीत-केंद्रित और संकीर्ण धार्मिक विषय के रूप में देखा जाता है, जबकि इसकी समकालीन, वैश्विक और बहुविषयी प्रकृति पर पर्याप्त अकादमिक विमर्श उपलब्ध नहीं है। यही अंतर इस शोध को आवश्यक बनाता है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य हिन्दू अध्ययन को एक समग्र, बहुविषयी और वैश्विक अकादमिक अनुशासन के रूप में पुनः परिभाषित करना है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित लक्ष्य निहित हैं:

1. हिन्दू अध्ययन की परंपरागत दार्शनिक विचारधारा और आधुनिक अकादमिक ढाँचों के बीच संवाद को स्पष्ट करना।
2. हिन्दू अध्ययन के विकास का औपनिवेशिक और उत्तर-औपनिवेशिक संदर्भों में आलोचनात्मक विश्लेषण करना।
3. आधुनिक विश्वविद्यालयों के संदर्भ में हिन्दू अध्ययन की भूमिका और संरचना को समझना।
4. हिन्दू अध्ययन की वैश्विक प्रासंगिकता का मूल्यांकन प्रवासी भारतीय समुदायों के माध्यम से करना।
5. हिन्दू अध्ययन को केवल धार्मिक अध्ययन से अलग कर एक सांस्कृतिक, दार्शनिक और सामाजिक विमर्श के रूप में स्थापित करना।

इन उद्देश्यों के माध्यम से यह शोध हिन्दू अध्ययन को समकालीन वैश्विक बौद्धिक परिदृश्य में एक सशक्त और प्रासंगिक अनुशासन के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

शोध-कार्यविधि (Methodology)

यह शोध मुख्यतः गुणात्मक (Qualitative) और वर्णनात्मक-विश्लेषणात्मक (Descriptive-Analytical) पद्धति पर आधारित है। इसका उद्देश्य हिन्दू अध्ययन को एक धार्मिक विषय से आगे बढ़कर एक बहुविषयी, सांस्कृतिक और दार्शनिक अकादमिक अनुशासन के रूप में समझना है। इस अध्ययन में प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है।

प्राथमिक स्रोतों में वेद, उपनिषद, भगवद्गीता, महाभारत और प्रमुख दर्शन-ग्रंथ सम्मिलित हैं, जिन्हें दार्शनिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भों में विश्लेषित किया गया है (Radhakrishnan, 1951; Sharma, 2000)। द्वितीयक स्रोतों में आधुनिक विद्वानों के शोध-ग्रंथ, अकादमिक जर्नल्स और विश्वविद्यालयीय पाठ्यक्रमों के अध्ययन को शामिल किया गया है (Flood, 1996; Michaels, 2004; Lipner, 2010)।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

अध्ययन की प्रक्रिया में तुलनात्मक पद्धति (Comparative Method) अपनाई गई है, जिसके अंतर्गत भारतीय और पश्चिमी विद्वानों के दृष्टिकोणों का विश्लेषण किया गया (Halbfass, 1988)। साथ ही, आलोचनात्मक विमर्श पद्धति (Critical Discourse Analysis) के माध्यम से औपनिवेशिक और समकालीन व्याख्याओं की वैचारिक सीमाओं की पहचान की गई (Doniger, 2009)।

यह शोध ऐतिहासिक, दार्शनिक और समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य को समेकित कर हिन्दू अध्ययन के विकास और उसकी वैश्विक प्रासंगिकता को रेखांकित करता है। इस प्रकार यह पद्धति विषय की गहराई, व्यापकता और अकादमिक विश्वसनीयता सुनिश्चित करती है।

हिन्दू अध्ययन की परंपरागत जड़ें (Traditional Roots of Hindu Studies)

हिन्दू अध्ययन की परंपरागत जड़ें भारतीय सभ्यता के वैदिक युग में निहित हैं, जहाँ "धर्म" को किसी संकीर्ण धार्मिक आस्था के रूप में नहीं, बल्कि समग्र जीवन-विधान के रूप में देखा गया। वेदों में प्रकृति, देवत्व, मानव कर्तव्य और ब्रह्माण्डीय संतुलन के बीच एक सजीव संबंध स्थापित किया गया है। ऋग्वेद का यह मंत्र—

"एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति" (ऋग्वेद 1.164.46)
यह स्पष्ट करता है कि सत्य एक है, पर उसकी अभिव्यक्तियाँ अनेक हैं। यह सूत्र हिन्दू परंपरा की दार्शनिक उदारता और बहुलतावादी चेतना का मूल आधार है (Radhakrishnan, 1951)।

उपनिषदिक चिंतन ने इस परंपरा को गहन दार्शनिक आधार प्रदान किया। आत्मा और ब्रह्म की एकता का उद्घोष—

"तत्त्वमसि" (छान्दोग्य उपनिषद 6.8.7)
मानव चेतना को सार्वभौमिक सत्य से जोड़ता है। यह अवधारणा हिन्दू अध्ययन को केवल धर्म-केन्द्रित न रखकर अस्तित्ववादी दर्शन से भी जोड़ती है (Sharma, 2000)।

महाभारत और भगवद्गीता में कर्म, धर्म और मोक्ष की त्रिवेणी को जीवन का मार्ग बताया गया है—

"योगः कर्मसु कौशलम्" (गीता 2.50)
यह कर्म को केवल सामाजिक कर्तव्य नहीं, बल्कि आध्यात्मिक साधना बनाता है (Michaels, 2004)।

पुराण, स्मृति और लोकपरंपराएँ इन दार्शनिक सूत्रों को सामाजिक व्यवहार में रूपांतरित करती हैं। इस प्रकार हिन्दू अध्ययन एक ग्रंथीय, सांस्कृतिक और सामाजिक परंपरा के रूप में विकसित हुआ है (Lipner, 2010)।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

औपनिवेशिक काल और ओरिएंटल स्टडीज़ (Colonial Period and Oriental Studies)

औपनिवेशिक युग में पश्चिमी विद्वानों ने हिन्दू परंपरा का अध्ययन किया, किंतु प्रायः उसे बाहरी और तुलनात्मक दृष्टि से देखा गया। मैक्स मूलर जैसे विद्वानों ने वेदों का अनुवाद किया, परंतु उनकी व्याख्या में औपनिवेशिक पूर्वग्रह विद्यमान थे (Halbfass, 1988)।

इस काल में हिन्दू अध्ययन को "Religion" की संकीर्ण श्रेणी में बाँध दिया गया, जिससे इसकी समग्र जीवन-दृष्टि उपेक्षित हो गई। यह दृष्टिकोण भारतीय परंपरा को "रहस्यवादी" या "पौराणिक" बताकर उसकी दार्शनिक गहराई को कमतर आँकता था (Doniger, 2009)।

फिर भी, इसी काल में हिन्दू अध्ययन ने वैश्विक अकादमिक मंच पर प्रवेश किया। औपनिवेशिक संरचनाओं के भीतर ही भारतीय विद्वानों—जैसे राधाकृष्णन—ने पश्चिमी दर्शन से संवाद स्थापित कर हिन्दू अध्ययन को एक वैश्विक बौद्धिक परंपरा के रूप में पुनर्स्थापित किया (Radhakrishnan, 1951)।

आधुनिक विश्वविद्यालयों में हिन्दू अध्ययन (Hindu Studies in Modern Universities)

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से हिन्दू अध्ययन एक संगठित और स्वतंत्र अकादमिक अनुशासन के रूप में वैश्विक विश्वविद्यालयों में स्थापित होने लगा। प्रारंभ में इसे "धार्मिक अध्ययन" या "ओरिएंटल स्टडीज़" के अंतर्गत रखा गया, परंतु शीघ्र ही इसकी दार्शनिक गहराई, ऐतिहासिक विस्तार और सांस्कृतिक बहुलता के कारण इसे एक स्वतंत्र, बहुविषयी अकादमिक क्षेत्र के रूप में मान्यता मिलने लगी (Flood, 1996)।

हार्वर्ड, ऑक्सफोर्ड, SOAS (लंदन), कोलंबिया, प्रिंसटन तथा कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय प्रणाली जैसे संस्थानों में हिन्दू अध्ययन से संबंधित चेयर, शोध-केन्द्र और पाठ्यक्रम स्थापित किए गए हैं। इन विश्वविद्यालयों में वैदिक परंपरा से लेकर आधुनिक हिन्दू चिंतन तक का अध्ययन तुलनात्मक, आलोचनात्मक और अंतर्विषयी पद्धतियों से किया जाता है (Michaels, 2004)। यहाँ हिन्दू अध्ययन केवल ग्रंथों का अध्ययन नहीं, बल्कि सामाजिक व्यवहार, ऐतिहासिक परिवर्तन, लिंग विमर्श, राजनीति, पहचान और वैश्विक नैतिकता से भी जुड़ता है (Lipner, 2010)।

आधुनिक विश्वविद्यालयों में हिन्दू अध्ययन की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसे स्थिर परंपरा के रूप में नहीं, बल्कि जीवंत सांस्कृतिक प्रक्रिया के रूप में समझा जाता है। इस अकादमिक दृष्टि ने हिन्दू परंपरा को आलोचनात्मक विवेचन के माध्यम से वैश्विक विमर्श का हिस्सा बना दिया है (Halbfass, 1988)।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

वैश्विक अकादमिक विमर्श में हिन्दू अध्ययन (Hindu Studies in Global Academic Discourse)

इक्कीसवीं सदी में हिन्दू अध्ययन का विस्तार केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि वैचारिक भी है। यह अब केवल भारतीय उपमहाद्वीप तक सीमित न रहकर अमेरिका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण–पूर्व एशिया के विश्वविद्यालयों में पहचान, संस्कृति और नैतिकता से जुड़े विमर्शों का हिस्सा बन चुका है (Sharma, 2000)।

वैश्विक अकादमिक विमर्श में हिन्दू अध्ययन तीन प्रमुख प्रवृत्तियों के कारण उभरा है:
(1) प्रवासी भारतीय समुदायों का बढ़ता प्रभाव,
(2) बहुसांस्कृतिक समाजों में पहचान-विमर्श,
(3) आध्यात्मिकता और नैतिकता की वैश्विक खोज (Flood, 1996)।

आज हिन्दू अध्ययन केवल ‘‘धर्म’’ का अध्ययन नहीं, बल्कि सभ्यता, संस्कृति और मानवीय मूल्यों का अकादमिक अन्वेषण बन चुका है। यह समकालीन वैश्विक समाज में सह-अस्तित्व, पर्यावरणीय चेतना, मानसिक स्वास्थ्य और नैतिक नेतृत्व जैसे विषयों से गहराई से जुड़ता है (Doniger, 2009)।

इस प्रकार वैश्विक अकादमिक मंच पर हिन्दू अध्ययन एक ऐसे अनुशासन के रूप में उभरता है, जो परंपरा और आधुनिकता, स्थानीय और वैश्विक, अतीत और भविष्य के बीच सेतु बनाता है (Michaels, 2004)।

हिन्दू अध्ययन और प्रवासी भारतीय संदर्भ (Hindu Studies and the Indian Diaspora)

प्रवासी भारतीय समुदायों ने हिन्दू अध्ययन को वैश्विक अकादमिक विमर्श में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अमेरिका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका और दक्षिण–पूर्व एशिया में बसे भारतीयों ने अपनी धार्मिक-सांस्कृतिक परंपराओं को नए सामाजिक संदर्भों में जीवंत बनाए रखा है, जिससे हिन्दू अध्ययन केवल भारत-केंद्रित विषय न रहकर एक अंतरराष्ट्रीय और बहुसांस्कृतिक अनुशासन बन सका है (Michaels, 2004)।

प्रवासी समाज में मंदिर, पर्व, योग, ध्यान और सांस्कृतिक संस्थाएँ केवल आस्था के केंद्र नहीं, बल्कि पहचान, स्मृति और सामुदायिक एकता के प्रतीक हैं। ये संस्थाएँ नई पीढ़ियों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का माध्यम बनती हैं, जिससे हिन्दू परंपरा एक ‘‘स्थिर विरासत’’ के बजाय एक जीवंत और रूपांतरित परंपरा के रूप में सामने आती है (Lipner, 2010)।

वैश्विक विश्वविद्यालयों में हिन्दू अध्ययन के विभागों और शोध-केन्द्रों की स्थापना भी प्रवासी संदर्भ से गहराई से जुड़ी है। यह अकादमिक विस्तार हिन्दू परंपरा को केवल धार्मिक ढाँचे में नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, दार्शनिक और सामाजिक परंपरा के रूप में समझने की दिशा में ले जाता है (Halbfass, 1988)।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

इस प्रकार प्रवासी भारतीय संदर्भ हिन्दू अध्ययन को एक सीमित भौगोलिक परंपरा से उठाकर वैश्विक मानवीय विमर्श का हिस्सा बना देता है, जहाँ यह पहचान, बहुसांस्कृतिक सह-अस्तित्व और नैतिक मूल्यों के प्रश्नों से गहराई से जुड़ता है (Flood, 1996)।

बहुविषयी स्वरूप (Interdisciplinary Nature of Hindu Studies)

हिन्दू अध्ययन का मूल स्वरूप बहुविषयी है, क्योंकि हिन्दू परंपरा स्वयं किसी एक अनुशासन में सीमित नहीं रहती, बल्कि जीवन के प्रत्येक पक्ष—दार्शनिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और पर्यावरणीय—को समग्रता में देखने का आग्रह करती है। आधुनिक अकादमिक परिप्रेक्ष्य में हिन्दू अध्ययन दर्शन, इतिहास, समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, भाषाविज्ञान, साहित्य, कला, नाट्यशास्त्र, पर्यावरण अध्ययन और मनोविज्ञान जैसे क्षेत्रों से निरंतर संवाद करता है। इसी कारण इसे केवल "धार्मिक अध्ययन" तक सीमित करना इसके व्यापक बौद्धिक क्षितिज को संकुचित करना होगा (Flood, 1996)।

हिन्दू परंपरा के मूल ग्रंथों—वेद, उपनिषद, महाकाव्य और दर्शन—में ही इस बहुविषयकता के बीज निहित हैं। वेदों में प्रकृति और ब्रह्माण्डीय व्यवस्था का चिंतन मिलता है, उपनिषदों में अस्तित्ववादी दर्शन, गीता में नैतिक कर्मयोग, तथा पुराणों में सामाजिक-सांस्कृतिक संरचनाओं का विवेचन किया गया है। इन सभी ग्रंथों में मनुष्य, समाज और प्रकृति के पारस्परिक संबंधों को समझने का प्रयास दिखाई देता है, जो आधुनिक समाज-विज्ञान और पर्यावरण अध्ययन से प्रतिध्वनित होता है (Michaels, 2004)।

समकालीन संदर्भ में योग और ध्यान का अध्ययन केवल आध्यात्मिक साधना न रहकर चिकित्सा विज्ञान, मनोविज्ञान और न्यूरो-साइंस से जुड़ गया है। एलियाडे (1958) के अनुसार योग मानव चेतना के रूपांतरण की प्रक्रिया है, जिसे आज मानसिक स्वास्थ्य और तनाव प्रबंधन के क्षेत्र में व्यावहारिक रूप से अपनाया जा रहा है। इसी प्रकार, हिन्दू पर्यावरण-दृष्टि—जहाँ पृथ्वी को "माता" के रूप में देखा गया है—आधुनिक सतत विकास और पारिस्थितिक संतुलन के सिद्धांतों से संवाद करती है (Sharma, 2000)।

संस्कृत सूत्र—

"अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥"

हिन्दू अध्ययन की वैश्विक मानवतावादी दृष्टि को अभिव्यक्त करता है, जहाँ सम्पूर्ण मानवता एक परिवार के रूप में देखी जाती है (Radhakrishnan, 1951)।

इस प्रकार बहुविषयी स्वरूप हिन्दू अध्ययन को एक जीवंत, समकालीन और वैश्विक अकादमिक अनुशासन बनाता है, जो केवल अतीत का अध्ययन नहीं, बल्कि वर्तमान की समस्याओं का समाधान खोजने का माध्यम भी है (Lipner, 2010)।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

परंपरा और आधुनिकता का संवाद (Dialogue between Tradition and Modernity)

हिन्दू अध्ययन का एक केंद्रीय आयाम परंपरा और आधुनिकता के बीच निरंतर संवाद है, जहाँ प्राचीन दार्शनिक अवधारणाएँ समकालीन सामाजिक, नैतिक और वैज्ञानिक संदर्भों से जुड़कर नए अर्थ ग्रहण करती हैं। हिन्दू परंपरा स्वयं को किसी स्थिर, जड़ अतीत के रूप में प्रस्तुत नहीं करती, बल्कि एक जीवंत, आत्मपरिवर्तनशील परंपरा के रूप में सामने आती है, जो समय और परिस्थितियों के अनुरूप अपने अर्थों का पुनर्निर्माण करती है (Michaels, 2004)। यही लचीलापन इसे आधुनिक वैश्विक समाज के लिए प्रासंगिक बनाता है।

वेद, उपनिषद और भगवद्गीता जैसे ग्रंथों में निहित जीवन-दर्शन आज नैतिकता, मानवाधिकार, सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय चेतना जैसे आधुनिक विमर्शों से जुड़ता है। उदाहरणस्वरूप, गीता का कर्मयोग व्यक्ति को केवल निजी मोक्ष तक सीमित न रखकर सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक नेतृत्व की ओर प्रेरित करता है, जो आधुनिक लोकतांत्रिक और वैश्विक समाज की आवश्यकताओं से प्रतिध्वनित होता है (Sharma, 2000)।

वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के युग में भी हिन्दू अध्ययन विज्ञान और आध्यात्मिकता के बीच द्वंद्व नहीं, बल्कि सह-अस्तित्व और संतुलन की दृष्टि प्रस्तुत करता है। योग और ध्यान जैसे अभ्यास आज मनोविज्ञान और न्यूरो-साइंस के क्षेत्रों से जुड़कर यह सिद्ध करते हैं कि प्राचीन परंपराएँ आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान के साथ संवाद स्थापित कर सकती हैं (Eliade, 1958)।

इस प्रकार परंपरा और आधुनिकता विरोधी नहीं, बल्कि परस्पर पूरक हैं। हिन्दू अध्ययन यह दर्शाता है कि आधुनिक समाज की चुनौतियों—नैतिक संकट, सांस्कृतिक टकराव और पर्यावरणीय असंतुलन—का समाधान प्राचीन दार्शनिक दृष्टि और आधुनिक विवेक के संतुलन से ही संभव है (Flood, 1996)।

समकालीन प्रासंगिकता (Contemporary Relevance of Hindu Studies)

इक्कीसवीं सदी का वैश्विक समाज तीव्र सामाजिक, तकनीकी और सांस्कृतिक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, जिसके परिणामस्वरूप नैतिक विघटन, मानसिक तनाव, पर्यावरणीय संकट, पहचान की जटिलता और सांस्कृतिक संघर्ष जैसी समस्याएँ व्यापक रूप से उभरकर सामने आई हैं। ऐसे संदर्भ में हिन्दू अध्ययन केवल अतीत की धार्मिक परंपराओं का अध्ययन न रहकर एक मूल्य-आधारित जीवन-दृष्टि के रूप में समकालीन मानवता को दिशा प्रदान करता है। हिन्दू दर्शन का केंद्रीय सिद्धांत—धर्म—व्यक्ति के नैतिक कर्तव्य, सामाजिक उत्तरदायित्व और ब्रह्माण्डीय संतुलन को एक साथ जोड़ता है, जिससे आधुनिक जीवन की व्यावहारिक और आध्यात्मिक दोनों चुनौतियों का समाधान संभव होता है (Radhakrishnan, 1951)।

वैश्वीकरण और उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव से उत्पन्न आत्मकेन्द्रितता और सामाजिक विघटन के बीच हिन्दू अध्ययन सह-अस्तित्व, करुणा और समरसता जैसे मूल्यों को पुनः स्थापित करता है। “वसुधैव कुटुम्बकम्” की अवधारणा आज के बहुसांस्कृतिक

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

समाजों में वैश्विक नागरिकता और अंतर-सांस्कृतिक संवाद की आधारशिला बन सकती है (Sharma, 2000)। इसी प्रकार, ‘‘अहिंसा’’ और ‘‘सर्वभूतहिते रताः’’ जैसे सिद्धांत मानवाधिकार, शांति अध्ययन और सामाजिक न्याय जैसे समकालीन विमर्शों से गहराई से जुड़ते हैं (Lipner, 2010)।

आधुनिक युग में मानसिक स्वास्थ्य और तनाव प्रबंधन एक गंभीर वैश्विक समस्या बन चुके हैं। इस संदर्भ में योग, ध्यान और आत्म-चिंतन जैसी हिन्दू परंपराएँ आज वैश्विक स्वास्थ्य, मनोविज्ञान और न्यूरो-साइंस के क्षेत्रों में मान्यता प्राप्त कर चुकी हैं। एलियाडे (1958) के अनुसार योग केवल आध्यात्मिक साधना नहीं, बल्कि मानव चेतना के रूपांतरण का वैज्ञानिक मार्ग भी है। इस प्रकार हिन्दू अध्ययन समकालीन जीवन में आंतरिक शांति और मानसिक संतुलन का साधन प्रदान करता है।

पर्यावरणीय संकट के संदर्भ में भी हिन्दू अध्ययन की प्रासंगिकता अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रकृति को ‘माता’ के रूप में देखने की परंपरा और ‘‘ऋत’’ की अवधारणा पर्यावरण-संतुलन और सतत विकास की आधुनिक अवधारणाओं से प्रतिध्वनित होती है (Michaels, 2004)। यह दृष्टि मनुष्य और प्रकृति के बीच शोषण नहीं, बल्कि सह-अस्तित्व का संबंध स्थापित करती है।

अतः समकालीन वैश्विक समाज में हिन्दू अध्ययन केवल सांस्कृतिक विरासत का अध्ययन नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों, नैतिकता, पर्यावरणीय चेतना और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े समकालीन प्रश्नों का सशक्त समाधान प्रस्तुत करता है। इस प्रकार यह अनुशासन आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना प्राचीन काल में था (Flood, 1996)।

निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि हिन्दू अध्ययन केवल किसी धार्मिक परंपरा का सीमित या संकीर्ण विवेचन नहीं है, बल्कि भारतीय सभ्यता की उस समग्र जीवन-दृष्टि का अकादमिक अन्वेषण है, जो दर्शन, संस्कृति, नैतिकता और सामाजिक चेतना को एक सूत्र में बाँधती है। वैदिक युग से लेकर आधुनिक वैश्विक विश्वविद्यालयों तक इसकी विकास-यात्रा यह सिद्ध करती है कि हिन्दू अध्ययन एक जीवंत, गतिशील और बहुविषयी अनुशासन है, जो समय, समाज और स्थान के साथ निरंतर रूपांतरित होता रहा है (Michaels, 2004)।

औपनिवेशिक सीमाओं से निकलकर आज हिन्दू अध्ययन वैश्विक अकादमिक विमर्श का हिस्सा बन चुका है, जहाँ यह पहचान, संस्कृति, नैतिकता, पर्यावरण और मानसिक स्वास्थ्य जैसे समकालीन विषयों से गहराई से जुड़ता है (Lipner, 2010)। इसकी बहुविषयी प्रकृति इसे न केवल अतीत की विरासत बनाती है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी एक मानवमूल्य-आधारित दिशा प्रदान करती है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

अतः यह कहा जा सकता है कि हिन्दू अध्ययन न तो केवल परंपरा है और न ही केवल आधुनिक विमर्श, बल्कि दोनों के बीच सेतु बनकर खड़ा एक ऐसा अकादमिक क्षेत्र है, जो वैश्विक मानवता को सह-अस्तित्व, करुणा और संतुलन की दृष्टि प्रदान करता है (Flood, 1996; Radhakrishnan, 1951)।

References

Flood, G. (1996). *An Introduction to Hinduism*. Cambridge University Press.

Halbfass, W. (1988). *India and Europe: An Essay in Understanding*. SUNY Press.

Lipner, J. J. (2010). *Hindus: Their Religious Beliefs and Practices* (2nd ed.). Routledge.

Michaels, A. (2004). *Hinduism: Past and Present*. Princeton University Press.

Radhakrishnan, S. (1951). *Indian Philosophy* (Vol. 1–2). George Allen & Unwin.

Sharma, A. (2000). *Hinduism for Our Times*. Oxford University Press.

Doniger, W. (2009). *The Hindus: An Alternative History*. Penguin.

Eliade, M. (1958). *Yoga: Immortality and Freedom*. Princeton University Press.